PRIVATE CIRCULATION ONLY

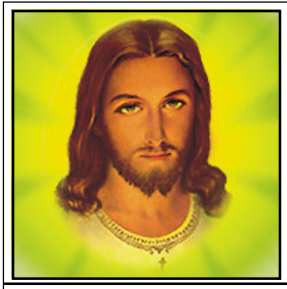

दिव्य ज्योति

अक्तूबर 2006 ISSUE 1006 ''मैं संसार की ज्योति हूँ'' न्यूज़ लैटर

क्षमा कर भुला देने वाला प्रभु का सच्चा प्रेम

संसार की सृष्टि के समय पिता परमेश्वर ने जो कुछ उसमें बनाया था, वह अपने आप में अद्‌भुत, सुन्दर व सन्तुलित था। बाइबिल कहती है, "ईश्वर ने अपने द्वारा बनाया हुआ सब कुछ देखा और यह उसको अच्छा लगा।" **(उत्पत्ति 1:31)** अन्त में उसने मानव को अपने रूप में धरती की मिट्टी से गढ़कर उसमें प्राणवायु फूंक दी और उसे एक सजीव सत्व बना दिया। **(उत्पत्ति 2:7)** उसने उसे सारी सृष्टि का मुकुट बनाया, सारी सृष्टि पर अधिकार दिया और यह कहकर आशीर्वाद दिया, "फलो–फूलो। पृथ्वी पर फैल जाओ और उसे अपने अधीन कर लो। समुद्र की मछलियों, आकाश के पक्षियों और पृथ्वी पर विचरने वाले सब जीव–जन्तुओं पर शासन करो।" **(उत्पत्ति 1:28)** प्रभु–ईश्वर ने मनुष्य को (हमारे आदिम पिता आदम) अदन की (अति सुन्दर) वाटिका में रख दिया, जिससे वह उसकी खेती–बारी और देख–रेख करता रहे। **(उत्पत्ति 2:15)** उसने उसके लिए नारी को बनाया जो उसकी उपयुक्त सहयोगी हो। **(उत्पत्ति 2:18, 20-23)**

पर दोनों ने धूर्त शैतान के बहकावे में आकर ईश्वर की एक आज्ञा को, कि तुम भले–बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल नहीं खाना, उल्लंघन कर दिया। इस तरह पाप का जन्म इस संसार में हुआ और मनुष्य का पतन हुआ। उसे अपने किये पाप का दण्ड बहुत भारी पड़ा– पूरी जिन्दगी मेहनत कर पसीना बहाना, पाप की दासता में जुतना व मृत्यु के अधीन होना (क्योंकि पाप का वेतन मृत्यु है), ईश्वर के साथ बँधे घनिष्ट सम्बन्ध का टूटना और अदन वाटिका से निर्वासित किया जाना। आदम की सन्तति भी पाप की ओर उन्मुख होने लगी और ईश्वर से विमुख हुई और अपने रचयिता के विरूद्ध ही विद्रोह कर बैठी। जब प्रभु ने देखा कि पृथ्वी पर मनुष्यों की दुष्टता बढ़ गयी है और उनके मन में निरन्तर बुरे विचार और बुरी प्रवृत्तियाँ उत्पन्न होती हैं, तो प्रभु को इस बात का खेद हुआ कि उसने पृथ्वी पर मनुष्य को बनाया था। इसलिए वह बहुत दुःखी था। **(उत्पत्ति 6:5-7)** इसलिए उसने पृथ्वी पर से सारी मानवजाति को, नूह और उसके परिवार को छोड़, एक जलप्रलय द्वारा समाप्त कर दिया। बाद में नूह पर प्रसन्न होकर प्रभु ने यह प्रतिज्ञा की कि वह दोबारा पृथ्वी को अभिशाप नहीं देंगे, न उसके प्राणियों का ऐसा विनाश करेंगे। **(उत्पत्ति 8:21-22)**

ईश्वर ने इब्राहीम के वंश को, इसहाक के वंश को, याकूब के वंश को, अर्थात् इस्राएलियों को अपनी प्रजा के रूप में चुना और उनके साथ अपना विधान ठहराया, उन्हें प्रतिज्ञाँए दीं। उसने उन्हें अन्य देश की दासता से, मूसा के द्वारा महान् चमत्कारों को दिखाकर, मुक्त किया। उसने उन्हें दस नियम और अन्य विधान–सम्बन्धी नियम दिये। उसने अपने सेवक मूसा पर अपना **"प्रभु"** नाम प्रकट किया और अपने विषय में यह समझाया कि, **"जो उसे प्यार करते हैं और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, वह हज़ार पीढ़ियों तक उन पर दया करता है" (निर्गमन 20:6)**। उसने मूसा के सामने से निकल कर यह कहा, **"प्रभु; प्रभु एक करूणामय तथा कृपालु ईश्वर है। वह देर से क्रोध करता और अनुकम्पा तथा सत्यप्रतिज्ञता का धनी है। वह हज़ार**

(शेष भाग पृष्ठ 2 पर)

पवित्र माला की रानी एवं हमारी मध्यस्थ, माँ मरियम, के आदर में एक गीत

Ch: वो सबसे सुन्दर, ममता का सागर,
ऐसी है मेरी माँ
सब नारियों में धन्य है वो, मेरे प्रभु की माँ
स्वर्ग-धरा की वो महारानी, सबकी सहायिनी माँ
धन्य है मरियम माँ
आल्लेलूया (2), प्रणाम तुझको हे माँ मरिया

i) वो अति निर्मल, वो अति पावन,
प्रभु येशु की माँ
दूतों-सन्तों की है वो रानी, वो वरदायिनी माँ

ii) आँचल का अपने देती सहारा,
पाप से बचाये माँ
देती दिलासा दीन-दुःखियों को,
दया का सागर माँ

iii) भोर का तारा, देती उजाला, नित्य कुँवारी माँ
अपने भक्तों का उद्धार करती,
स्वर्ग का द्वार है माँ

प्रभु कहते हैं, "देखो, मैं शीघ्र ही आऊँगा। मेरा पुरस्कार मेरे पास है और मैं प्रत्येक मनुष्य को उसके कर्मों का प्रतिफल दूँगा।" (प्रकाशना 22:12)

"आप अपने परमपावन विश्वास की नींव पर अपने जीवन का निर्माण करें। पवित्र आत्मा से प्रार्थना करते रहें।" (यूदस 20)

(पृष्ठ 1 का शेष भाग)

पीढ़ियों तक अपनी कृपा बनाये रखता और बुराई, अपराध और पाप क्षमा करता है।" (निर्गमन 34:6-7) *40 वर्षों तक मरूभूमि में स्वादिष्ट भोजन व पानी प्रदान करने के बाद (क्योंकि एक पूरी पीढ़ी को, जिसने प्रभु पर अविश्वास दिखाया था, समाप्त होना था) ईश्वर ने अन्त में उन्हें योशुआ के नेतृत्व में प्रतिज्ञात देश प्रदान किया। पर फिर भी उनका हृदय ईश्वर से विमुख हो गया, वह ईश्वर की सभी कृपाओं व चमत्कारों को भूल गये, उसकी आज्ञाओं का उल्लंघन कर पाप–पर–पाप करते गये।*

उन्हें अपनी प्रतिज्ञाँए, आशीर्वाद व विधान याद दिलाने के लिए, अपनी इच्छा प्रकट करने के लिए, उनके पापों का एहसास दिलाकर पश्चाताप करने की प्रेरणा देने के लिए, आगामी संकट व दुविधा व दण्ड से बचने के लिए चेतावनी देने के लिए प्रभु ने अपनी प्रजा में से नबियों को नियुक्त किया। पर उन्होंने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया, उनका तिरस्कार कर उन्हें मरवा डाला। संसार का पाप बहुत अधिक हो जाने पर अन्त में पिता परमेश्वर को मानवजाति की रक्षा व उद्धार के लिए स्वंय अपने इकलौते पुत्र, प्रभु येशु, को इस धरती पर भेजना पड़ा।

*प्रभु येशु ने अपनी पिता की इच्छापूर्ति के लिए मानव बन कर पवित्र आत्मा की शक्ति द्वारा एक कुँवारी से जन्म लिया और बड़े होने पर अपने पिता का प्रेम व इच्छा प्रकट की– अपने वचन, शिक्षा, आचरण व कार्यों द्वारा। प्रभु येशु ने यह सिखाया, "**अपने शत्रुओं से प्रेम करो और जो तुम पर अत्याचार करते हैं उनके लिए प्रार्थना करो।** इस से तुम अपने स्वर्गिक पिता की सन्तान बन जाओगे...। यदि तुम उन्हीं से प्रेम करते हो, जो तुम से प्रेम करते हैं, तो पुरस्कार का दावा कैसे कर सकते हो? क्या नाकेदार भी ऐसा नहीं करते? और यदि तुम अपने भाईयों को ही नमस्कार करते हो, तो क्या बड़ा काम करते हो? क्या गैर–यहूदी भी ऐसा नहीं करते? इसलिए **तुम पूर्ण बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गिक पिता पूर्ण है।"(सन्त मत्ती 5:44-48)***

*यह कहना बड़ा आसान है कि अपने शत्रुओं से प्रेम करो पर यह करना वाकई मुश्किल और अधिकतर लोगों के लिए नामुमकिन भी है। किसी की भी गलती या किसी के द्वारा किये अत्याचार, अन्याय या धोखाधड़ी को कौन क्षमा कर सकेगा? पर प्रभु ने स्वंय यह कहा, "दुष्ट का सामना नहीं करो। यदि कोई तुम्हारे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, तो दूसरा भी उसके सामने कर दो। जो मुक़दमा लड़ कर तुम्हारा कुरता लेना चाहता है, उसे अपनी चादर भी ले लेने दो।"**(सन्त मत्ती 5:38-40)*** *यही है ईश्वरीय प्रेम का, सच्चे प्रेम का उत्तम उदाहरण। प्रभु तो पापियों को बचाने आये थे और इसलिए वह किसी को चंगाई देने से उनके पाप क्षमा करते थे, किसी वेश्या या नाकेदार या पापी के पश्चाताप करने पर उन्हें क्षमा कर देते थे क्योंकि उन्हें पिता से न्याय व क्षमा करने का पूरा अधिकार प्राप्त है।* ***(योहन 5:26-27)***

ऐसी अनोखी शिक्षा प्रभु येशु के अलावा न उससे पहले किसी ने दी थी और न उसके बाद कोई दे सका क्योंकि यह स्वंय करना सम्भव नहीं था और शिक्षक के कथनी व करनी में सामंजस्य नहीं होता। शिक्षा देना ही नहीं, उसके अनुसार आचरण करना भी अनिवार्य है जो प्रभु येशु ने कर दिखाया और सच्चे शिक्षक या गुरू कहलाये। निष्पाप हो कर भी उन्हें झूठे इल्ज़ामों में पकड़वाकर क्रूस पर चढ़ा दिया गया। उनका अपमान किया गया– ईशपुत्र को ईश–निन्दक कहा गया, उनका उपहास किया गया, उन्हें कोड़े मारे गये, उनके सिर पर काँटों का मुकुट लगाया गया ***(सन्त मारकुस15:17-20)*** *उनकी आँखों में पट्टी बाँध कर उन्हें घूँसे मारे गये व उन पर थूका गया, नौकरों ने भी उनको थप्पड़ मारे,* ***(सन्त मारकुस14:65)*** *उनके वस्त्र उतार लिये गये, उनके हाथों–पैरों में कीलें ठोकी गयीं, क्रूस पर चढ़ाने के बाद प्यास लगने पर उनको खट्टी अंगूरी पिलाई गयी* ***(सन्त मारकुस 15:36)*** *और यहाँ तक कि जो डाकू उनके साथ क्रूस पर चढाये गये थे, उनमें से एक ने उनकी निन्दा भी की हालांकि वह भी क्रूस पर टँगा था।* ***(सन्त लूकस 23:39)*** *पर प्रभु येशु ने अपने क्रूस पर चढ़ाने वालों के लिए पिता से प्रार्थना की,* ***"पिता! इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं।"(सन्त लूकस 23:34)*** *यह सब उन्होंने हमारे प्रति प्रेम के खातिर अपने पिता की इच्छापूर्ति के लिए ही किया। प्रभु येशु ने ही स्वंय यह बताया था,* ***"इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्र के लिए अपने प्राण अर्पित कर दे।" (सन्त योहन15:13)*** *ऐसे ही प्रेम की अपेक्षा प्रभु भी हमसे करते हैं।*

हम ध्यान से पढ़ें कि "पवित्र बाइबिल" हमें ***प्रेम*** *के विषय में क्या सिखाती है–*

"प्रेम सहनशील और दयालु है। प्रेम न तो ईर्ष्या करता है, न डींग मारता, न घमण्ड करता है। प्रेम अशोभनीय व्यवहार नहीं करता। वह अपना स्वार्थ नहीं खोजता। प्रेम न तो झुँझलाता है और न बुराई का लेखा रखता है। वह दूसरों के पाप से नहीं, बल्कि उनके सदाचरण से प्रसन्न होता है। वह सब-कुछ ढाँक देता है सब-कुछ पर विश्वास करता है, सब-कुछ की आशा करता है और सब-कुछ सह लेता है।" (1कुरिन्थियों13:4-7)

यदि यही सब गुण हमारे प्रेम में पाये जाते हैं तो वह ***सच्चा प्रेम*** *होगा। पर यह तब तक सम्भव नहीं होगा, हमारा प्रेम तब तक पूर्ण न होगा जब तक हमने सच्चे ईश्वर को जान न लिया हो और उसके प्रेम को स्वंय अनुभव न कर लिया हो। क्योंकि* ***"जो प्यार नही करता, वह ईश्वर को नहीं जानता; क्योंकि ईश्वर प्रेम है। ईश्वर हमको प्यार करता है। यह इस से प्रकट हुआ है कि ईश्वर ने अपने इकलौते पुत्र को संसार में भेजा, जिससे हम उसके द्वारा जीवन प्राप्त करें।" (1योहन 4:8-9)***

अनेकों के पापों को क्षमा करने वाले तथा अपने क्रूस बलिदान द्वारा हम सबको पापों के दण्ड को अपने प्रायश्चित द्वारा मुक्त कराने वाले येशु को अपने एकमात्र मुक्तिदाता ***(प्रेरित चरित4:12)*** *के रुप में हम स्वीकार कर उनसे क्षमा माँगे और उनके वचनों पर विश्वास करते हुए उसके अनुसार चलते रहें। क्योंकि प्रभु येशु ने स्वंय यह कहा है,* ***"जो मेरी आज्ञाएँ जानता है और उनका पालन करता है, वही मुझे प्यार करता है और जो मुझे प्यार करता है, उसे मेरा पिता भी प्यार करेगा और उसे मैं भी प्यार करुँगा और उस पर अपने को प्रकट करुँगा।" (पढ़ें सन्त योहन 14:12)।*** *इस तरह रव्रीस्तीय जीवन का मूल सिद्धान्त* ***प्रेम*** *है जो ईश्वर से ही आता है, संसार से नहीं। पवित्र बाइबिल का मूल आधार भी ईश्वर का मनुष्य के प्रति प्रेम है, जो पश्चाताप करने वाले को क्षमा करके उनके पापों को भुला देता है। पवित्र आत्मा को प्राप्त करके हम भी ईश्वर के प्रेम में परिपूर्ण बन सकेंगे और दूसरों को भी अपने समान प्रेम कर (जैसे प्रभु येशु दूसरी प्रमुख आज्ञा दी है– अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम करो–* ***सन्त मत्ती 22:36)*** *उन्हें प्रभु के पास ले आकर ईश्वरीय प्रेम में जोड़ने वाले साधन बनेंगे।*

इसलिए हम अपने भाई–बहनों को पिता के क्षमा करने वाले प्रेम समान प्यार करें, जिससे हमारे पाप भी क्षमा हों ***(सन्त मत्ती 6:14-15)*** *तथा हमें स्वर्गिक कृपाँए प्राप्त करने में कोई बाधा न हो* ***(सन्त मत्ती5:23-24)*** *और अपने शत्रुओं से प्रेम कर हम प्रभु येशु के सच्चे अनुयायी कहलाने योग्य बनें।*

"मैं एक दूत को तुम्हारे आगे-आगे भेजता हूँ। वह रास्ते में तुम्हारी रक्षा करेगा और तुम्हें उस स्थान ले जायेगा, जिसे मैंने निश्चित किया है। उसका सम्मान करो और उसकी बातें सुनो। उसके विरूद्ध विद्रोह मत करो। वह तुम्हारा अपराध क्षमा नहीं करेगा, क्योंकि उसे मेरी ओर से अधिकार मिला है।" (निर्गमन23:20-21)

"जीवन-धाम" के जीवित साक्ष्य

"संतान प्रभु द्वारा प्रदत्त पारितोषक है!" प्रभु ने इन्हें संतान का दान देकर अनुग्रहित किया!

प्रभु येशु की स्तुति, धन्यवाद और महिमा।

मेरी, मंजू (उम्र–24 वर्ष), (चित्र में दायीं ओर) शादी 5 साल पहले मनोज से हुई थी पर हमारा परिवार सन्तान के बगैर सूना था। सभी इलाज नाकामयाब रहे। किसी बहन ने "जीवन–धाम" की चंगाई प्रार्थना के बारे में बताया। 18 महीने पहले मैं यहाँ प्रार्थना में पहली बार आई और तब से हर रविवार शामिल होती रही। प्रभु की कृपा से मुझे गर्भ ठहरा और इस वर्ष जून 27 को हमें एक सुन्दर–सा पुत्र, दिव्यांशु, प्राप्त हो गया।

मेरी, पूनम (उम्र–26 वर्ष), शादी संजय से 8 साल पहले हुई थी पर हमें कोई सन्तान प्राप्त नहीं हुई। सभी इलाज नाकामयाब रहे। एक साल पहले मैं यहाँ प्रार्थना में पहली बार आई और तब से हर रविवार शामिल होती रही। प्रभु की कृपा से इस वर्ष हमें एक पुत्र प्राप्त हुआ।

मेरी, रिंकू (उम्र–24 वर्ष), शादी अजीत से 10 साल पहले हुई थी पर हमें कोई सन्तान प्राप्त नहीं हो सकी। सभी इलाज नाकामयाब रहे और डाक्टरों ने यह घोषित कर दिया था कि हमें सन्तान प्राप्त न हो सकेगी। पर मैं यहाँ एक साल पहले प्रार्थना में पहली बार आई और फिर आती रही। प्रभु येशु की कृपा से इस वर्ष हमारे परिवार में एक लड़की का जन्म हुआ।

मेरी, बबीता (उम्र–23 वर्ष), शादी राजेश से 9 साल पहले हुई थी पर हमें कोई सन्तान प्राप्त नहीं हुई। सभी इलाज निष्फल रहे। करीब एक साल पहले मैं यहाँ प्रार्थना में पहली बार आई और तब से लगातार आती रही। प्रभु येशु की कृपा से इस वर्ष हमारे परिवार में एक लड़की, डॉली, का जन्म हुआ। प्रभु येशु को लाखों–लाखों बार धन्यवाद।

"धन्य हैं वे, जो प्रभु पर श्रद्धा रखते और उसके मार्गों पर चलते हैं!. . . तुम्हारी पत्नी तुम्हारे घर के आँगन में दाखलता की तरह फलती-फूलती है। तुम्हारी सन्तान जैतून की टहनियों की तरह तुम्हारे चौके की शोभा बढ़ाती है। जो प्रभु पर श्रद्धा रखता है, उसे यही आशीर्वाद प्राप्त होता है।"

(स्तोत्र 128:1,3-4)

अनपढ़ को पढ़ने की कृपा देते प्रभु येशु

प्रभु येशु की स्तुति, धन्यवाद और महिमा।

*मैं, शकुन्तला(उम्र–27 वर्ष), पिछले साल क्रिसमस से यहाँ जीवन–धाम की प्रार्थना में शामिल हो रही हूँ। यहाँ आने का कारण मेरी बीमारी थी जो मुझे चैन से जीने नहीं देती थी। मैं हर रोज़ बीमार पड़ी रहती थी और दवाईयाँ लेने पर भी बीमारी फिर मुझे पकड़ लेती थी। घर का काम मैं कभी कर नहीं पाती थी। पर जब से मैं यहाँ हर इतवार आने लगी मेरी सारी बीमारियाँ दूर हो गई। मुझे "नया जीवन" की किताब पढ़ने की हार्दिक इच्छा थी पर मैं तो कभी स्कूल में पढ़ने–लिखने गई ही नहीं। मैं प्रभु येशु की हर दिन यही प्रार्थना करती थी कि मैं वह किताब पढ़ सकूँ। एक दिन प्रार्थना के दौरान प्रभु ने मुझे **येशु** का नाम व **माँ मरियम** का नाम पढ़ना सिखा दिया। धीरे–धीरे प्रभु मुझे सारे अक्षर समझाते गये और मैं अब "नया जीवन" व बाइबिल रोज़ पढ़*

लेती हूँ। प्रभु येशु की महिमा और विजय!

***शकुन्तला**, फरीदाबाद*

"शिक्षा की सदिच्छा प्रज्ञा का प्रेम है। शिक्षा का प्रेम उसकी आज्ञाओं का पालन है। उसकी आज्ञाओं के पालन में अमरता है। अमरता ईश्वर के निकट पहुँचाती है, इसलिए प्रज्ञा की सदिच्छा राजत्व दिलाती है।" (प्रज्ञा 6:18-20)

खोई हुई आवाज़ लौटाते प्रभु येशु

प्रभु येशु की स्तुति हो! प्रभु येशु को धन्यवाद! प्रभु येशु की महिमा हो!

मैं, लाला राम (उम्र–32 वर्ष), पिछले 1 महीने से गूँगा हो गया था। 18 साल से मैं ड्राईवरी करता आ रहा हूँ। अचानक एक दिन घर वापस आने पर मेरी आवाज़ निकलनी बन्द हो गई। कई डॉक्टरों के पास गया और दवाँए लीं। पर कोई फायदा नहीं हुआ। AIIMS (मेडिकल) के डाक्टर ने दिमागी कमज़ोरी बताई। पर मैंने वहाँ से एक दिन की ही दवा ली। मुझे इशारों से लोगों को समझाना पडता था। मैं कण्डक्टरी करने के काबिल नहीं रहा।

*मैं RTV बस चलाकर इतवार को लोगों को यहाँ काफी समय से ला रहा हूँ। किसी सवारी के बताने पर मैं यहाँ **जीवन-धाम** में इतवार प्रार्थना में शामिल होने लगा। चार हफ्ते बाद आज स्तुति के दौरान प्रभु येशु की कृपा से मेरी आवाज़ अचानक ही वापस आ गई और मैं खुशी के मारे दौड़ता हुआ यहाँ स्टेज पर गवाही देने आ गया। आल्लेलूया!* ***लाला राम**, फरीदाबाद*

"मेरा कण्ठ प्रभु की स्तुति करता रहेगा। सभी मनुष्य सदा-सर्वदा उसका पवित्र नाम धन्य कहें।" (स्तोत्र 145:21)

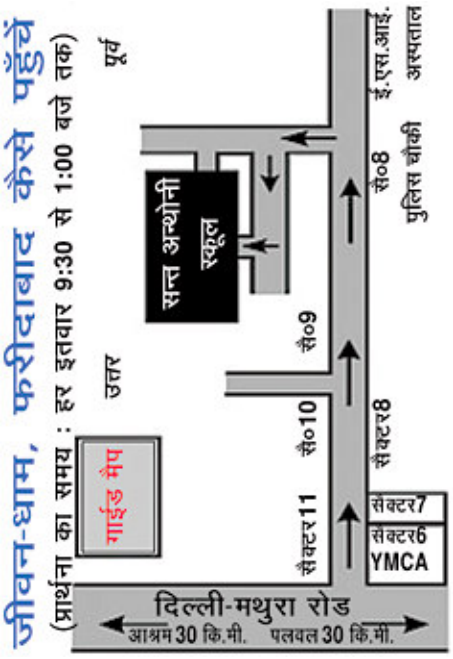

"ईश्वर ने मुझे फिर भेजा, जिससे मैं आपको और आपकी बहू को स्वस्थ करूँ। मैं स्वर्गदूत रफ़ाएल हूँ। मैं उन सात स्वर्गदूतों में से एक हूँ,जो प्रभु की महिमाके सामने उपस्थित रहते हैं।" (टोबीत 12:14-15)

30 वर्ष पुरानी गठिया की बीमारी से मुक्ति मिली

प्रभु येशु की स्तुति, धन्यवाद और महिमा।

मैं, मुतम्मा, पिछले 30 सालों से गठिया की बीमारी से पीड़ित थी। दर्द के कारण मुझे चलने में बहुत तकलीफ होती थी। घर का कोई काम मुझसे नहीं किया जाता था और घर से बाहर मैं निकलती ही नहीं थी। इस बीमारी के इलाज के लिए 2 लाख रूपए से भी अधिक पैसे मैंने खर्च कर डाले। दिल्ली, मद्रास और रंगून (बर्मा) में सब डॉक्टरों को दिखा दिया और दवाँए ले कर देख लीं। पर कहीं से भी दर्द में आराम नहीं मिला।

पिछले महीने मेरे एक पडोसी ने मुझे जीवन–धाम में चल रही रोग –चंगाई प्रार्थना के विषय में बताया। उसके साथ मैं यहाँ पर इतवार को आई। पहले दिन मुझे जोड़ों के दर्द में थोड़ा आराम मिल गया है। प्रभु येशु की दया से मुझे एक महीने के अन्दर इस दर्द से पूरा छुटकारा मिल गया है। अब मैं घर का सारा काम आराम से खुद कर लेती हूँ। फिर मुझे थकान भी नहीं होती। अब मैं खूब घूम–फिर भी लेती हूँ। आल्लेलूया!

मुतम्मा(उम्र-80 वर्ष), मदनगीर, दिल्ली

"मेरी आत्मा! प्रभु को धन्य कहो और उसके एक भी वरदान कभी नहीं भुलाओ। वह तेरे सभी अपराध क्षमा करता और तेरी सारी दुर्बलताँए दूर करता है।"

(स्तोत्र 103:2-3)

★ बाईबिल प्रतियोगिता ★

6) लूकस रचित सुसमाचार
e) अध्याय 15-17

प्रस्तुत प्रश्न **सन्त लूकस** के सुसमाचार के अध्याय **15 से 17** तक से बनाये गये हैं जिनके सही उत्तरों को आप ने दिये गये उत्तरों से (**क, ख, ग और घ**) चुनकर हमें लिख भेजना है। कुछ प्रश्नों के एक से भी ज्यादा सही उत्तर हो सकते हैं। साथ ही सही उत्तर देने वाले वाक्याशों की भी संख्या अध्याय सहित बतायें।

1) मरणोपरान्त अधोलोक की यन्त्रणा से बचने के लिए जीवित रहने पर एक मनुष्य के लिए क्या–क्या करना ज़रूरी है?
क) इस जीवन में दूसरों की ज़रूरतों पर ध्यान देकर उनकी मदद करो
ख) ऐशो–आराम में जीवन बिताओ और अपने सुख के लिए धन का संचय करो
ग) अपने पापों के लिए पश्चाताप करो और उनके लिए ईश्वर से क्षमा माँगो
घ) अपनी ज़रूरतें पूरी करने के बाद गरीबों को दान दो, खाना खिलाओ

2) नूह के दिनों में और लोट के दिनों में लोग क्या–क्या करते थे?
क) वे खाते–पीते रहते थे
ख) वे पेड़ लगाते व घर बनाते रहते थे
ग) वे शादी–ब्याह करते थे
घ) वे लडाई–झगड़ा करते थे

3) प्रभु येशु क्यों पापियों का स्वागत करते व उनके साथ खाते–पीते थे?
क) क्योंकि वे पापियों को बचाने व उनका उद्धार करने आये थे।
ख) क्योंकि वे उनसे अपनी बडाई सुनना व उन्हें अपनी महानता दिखाना चाहते थे।
ग) स्वंय ईश्वर के पुत्र होकर भी वे मनुष्य की कमज़ोरी जानते थे और उन्हें अपने प्रेम व क्षमा द्वारा पाप की दासता से मुक्त करना चाहते थे।
घ) क्योंकि ईश्वर, उनके पिता, एक पश्चातापी पापी के लौटने पर स्वर्ग में आनन्द मनाते हैं।

4) प्रभु येशु ने धन के विषय में क्या–क्या बातें बताई हैं?
क) तुम ईश्वर और धन–दोनों की सेवा कर सकते हो
ख) झूठे धन से अपने लिए मित्र बना लो
ग) पराये धन में ईमानदार न रहने पर कोई भी तुम्हें तुम्हारा अपना धन नहीं देगा
घ) जो बड़ी बातों में बेईमान है, वह छोटी–से–छोटी बातों में भी बेईमान होगा

5) पुनरागमन के दिन प्रभु के विषय में कौन–सी बातें झूठी सिद्ध होंगीं?
क) लोग उसे आकाश में बिजली की तरह तेज़ गति से आता हुआ देखेंगे
ख) "देखो वह यहाँ है" या "वहाँ है"– ऐसा लोग उसके विषय में कहेंगे
ग) वह आग और गन्धक बरसा कर सभी दुष्टों को नष्ट कर देंगे
घ) मानवपुत्र का एक दिन सभी देख सकेंगे

6) छोटे बेटे के वापस आ जाने पर पिताजी ने नौकरों को क्या–क्या आदेश दिये?
क) उसे अपने साथ आज से मजदूरी करने दो
ख) उसकी उँगली में अँगूठी व उसके पैरों में जूते पहना दो
ग) उसे अच्छे–अच्छे कपड़े पहनाओ
घ) मोटे बछड़े की बलि चढ़ाओ और खूब खाओ–पियो

7) प्रभु के अनुसार अपने भाई को कितनी बार क्षमा कर देना चाहिए?
क) उसे डाँटने के बाद एक बार
ख) सात बार ग)अनगिनत बार
घ) यदि वह पश्चाताप न करे तो कभी नहीं

8) चंगे हुए दस कोढ़ियों में से कितनों ने स्वंय को याजक को पहले दिखाया और कितने प्रभु के पास धन्यवाद देने आए?
क) दस, कोई भी नहीं ख) नौ, एक
ग) एक, नौ घ) कोई भी नहीं, एक

पिछली प्रतियोगिता के सही उत्तर

6) लूकस रचित सुसमाचार
d) अध्याय 11-14

1) ख), ग) और घ) (14:18-20)
2) क) और ग) (13:10-13; 14:1-4)
3) ग) और घ) (11:30-32)
4) ख) और ग) (13:18-21)
5) ख) (11:5-8)
6) क), ग) और घ)(12:37; 13:35; 14:13-14)
7) क), ख), ग) और घ)(11:39,42-43,47-48)
8) ग) (12:49, 51; 13:14; 14:33)

प्रतियोगिता के नियम

क) प्रतियोगिता के उत्तर अगले महीने के 20 तारीख तक हमारे पास पहुँच जाने चाहिएँ। उत्तर एक पोस्ट कार्ड या चिट्ठी में इस पते पर लिख भेजिए – **जीवन-धाम, मकान नं० 696, सैक्टर-22, फरीदाबाद-121005, हरियाणा।**
ख) अपना नाम व पता स्पष्ट शब्दों में लिखिए। प्रतियोगिता की संख्या एवं शीर्षक लिखना ज़रूरी है। सभी उत्तर(प्रश्न संख्या सहित) क्रमानुसार होने चाहिएँ।
ग) इनाम सिर्फ उन प्रतियोगियों को मिलेगा जो लगातार तीन प्रतियोगिताओं के सही–सही उत्तर समय पर देंगे।
घ) प्रतियोगिता के सही उत्तर अगले माह के प्रकाशन में बताये जायेंगे।
ङ) सहीं उत्तरों से मिलाने के लिए अपने उत्तरों की एक प्रति अपने पास भी रखें।

Visit our website:
www.jeevandham.org
E-mail : justcallanthony@yahoo.com

क्या आप चिन्तित.....हैं?
क्या आप दुःखी.....हैं?
क्या आप रोगी.....हैं?
क्या आप के मन में अशान्ति.....है?

आपको सांत्वना देने के लिए एक जगह है। वह है 'जीवन-धाम'। आप सन्त अन्तोनी स्कूल, सैक्टर-9 फरीदाबाद में हर रविवार प्रातः 9.00 बजे से 12.30 बजे तक 'जीवन-धाम' 696/22, फरीदाबाद द्वारा आयोजित प्रार्थना सभा में भाग लेकर यीशु के अनुग्रहों को प्राप्त कर सकते हैं।

"स्वर्गदूत ऊपर चल पड़ा। जब वे उठे, तो वह अन्तर्धान हो गया। उन्होंने ईश्वर को गाते हुए धन्यवाद दिया। वे ईश्वर के महान्कार्यों का बखान करते रहे, क्योंकि उन्हें ईश्वर का दूत दिखाई दिया था।" (टोबीत12:21-22)

Edited & Published by JEEVAN DHAM, Faridabad. Printed at Sabina Printing Press, 387/24, Faridabad, Haryana.